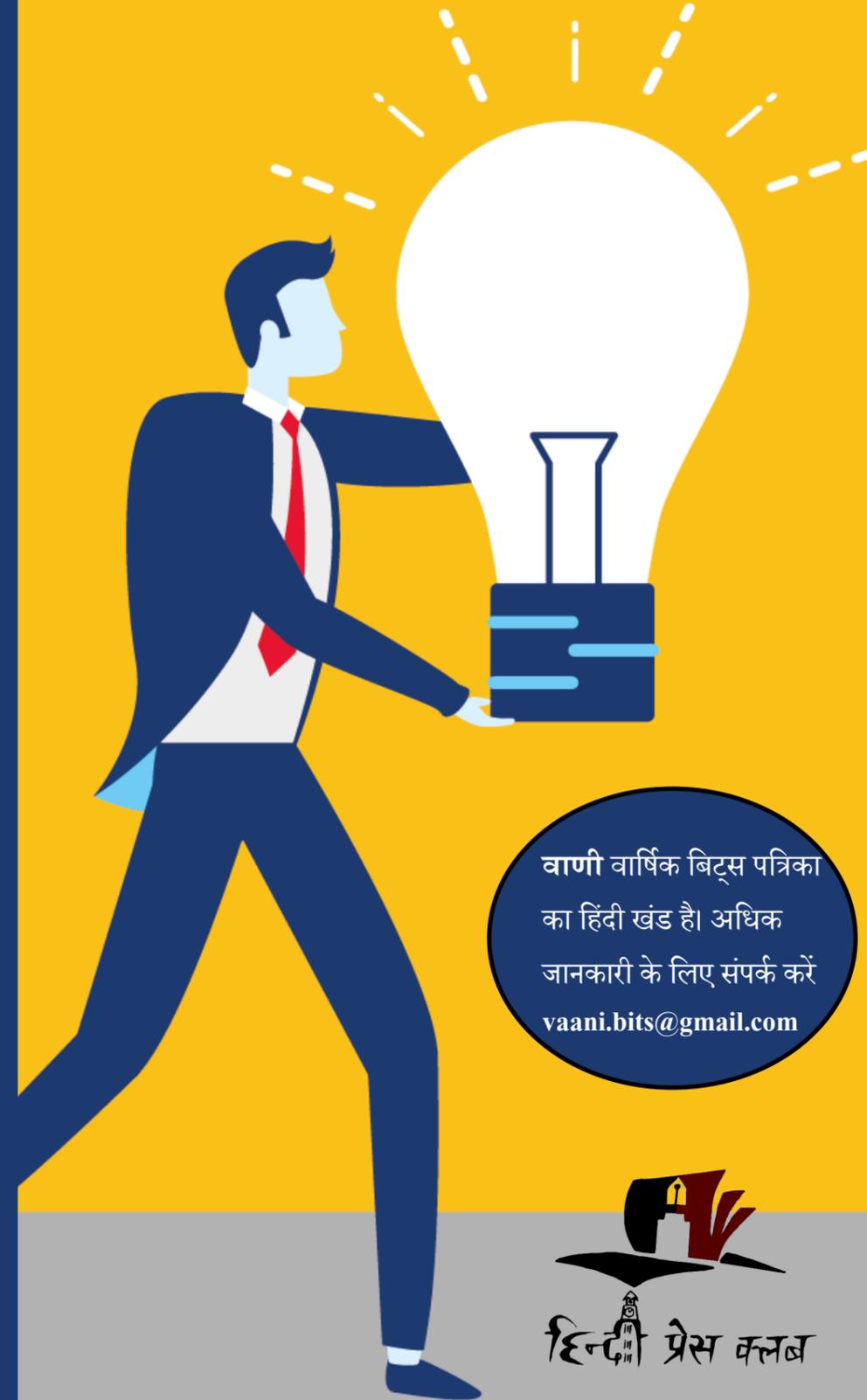


प्रवाह

सत्र-1, अंक-2

संपादकीय	2
साक्षात्कार-डायरेक्टर	3
साक्षात्कार-पी यू चीफ़	4
साक्षात्कार-पी यू चीफ़	5
इंटरशिप सेक्शन	6
इंटरशिप सेक्शन	7
प्लेसमेंट सेक्शन	8
प्लेसमेंट सेक्शन	9
साक्षात्कार—प्लेसमेंट प्रबंधक	10
वेदांत पटवारी	11
EXXON-इशिका	12

- ◇ 'VISION 2020' के सिलसिले में डायरेक्टर से चर्चा
- ◇ एक BITSian की लगी D. E. Shaw & Co. में 2.0 LPM की इंटरशिप!
- ◇ देखिए कैसे आर्थिक मंदी के बावजूद हुए प्लेसमेंट!



वाणी वार्षिक बिट्स पत्रिका का हिंदी खंड है। अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें vaani.bits@gmail.com



संपादकीय

अब तो कॉम्प्री की शुरुआत हो ही चुकी है, मुझे संभवतः अपनी किताबों में खोया होना चाहिए था, लेकिन यहाँ मैं इस न्यूज़लैटर के पहले पन्ने की क्लिष्ट हिंदी को समझने का प्रयास कर रही हूँ। क्या यह विचित्र है? या शायद कॉम्प्री के तनाव ने मुझे ऐसी चीजें करने पर मजबूर कर दिया है। शायद मेरा दिमाग बस किसी तरह किताबों या पढ़ाई से दूर भागना चाहता है।

शायद... आपके दिमाग में आए इस प्रश्न के कई उत्तर हो सकते हैं। दरअसल यह पूरी तरह आप पर निर्भर करता है कि आप इसका जवाब क्या मानना चाहते हैं। आज से ठीक 4 महीने पहले, इस सेमेस्टर की शुरुआत में आपने कई चीजें सोची होगी। कुछ के लिए तो यह स्कूल के बाद उनका पहला सेमेस्टर होने वाला था, वहीं कुछ के लिए यह 'यह सेम फोडूंगा' वाला सेमेस्टर था, हमारे पिछले कई सेमेस्टर की तरह। अगले चार महीनों के लिए हम सबके अपने-अपने लक्ष्य थे। किसी को कॉलेज आकर स्कूल के अपने व्यक्तित्व से अपनी बिलकुल उलट छवि बनानी थी व किसी को पिछले सेमेस्टर, गड्डे में गिर चुकी अपनी CG को किसी तरह मृत्यु से बचाना था, वहीं कुछ लोग ऐसे भी हैं जो अपनी 9.5 CG को 10 के और करीब ले जाने का लक्ष्य लेकर घर से निकले थे (चिंता न करें, मैं उनमें से नहीं हूँ)। इन सभी लोगों के बाद फिर आते हैं वे लोग जिनके लिए आने वाले 4 महीने बिट्स में उनके आखरी 4 महीने होने वाले थे – वे जो खुद को Psenti semites कहते हैं। यूँ तो उस समय उनके दिमाग में प्लेसमेंट्स के तनाव ने Psenti sem शुरू होने के उत्साह या दुःख को कहीं दबा दिया था जिसके कारण वे इन भावनाओं को बाकि लोगों के मुकाबले शायद कम अनुभव कर पाए।

प्लेसमेंट बड़ी चीज है – उससे भी बड़ा है अनप्लेसड रह जाने का डर। अपने पिछले वाक्य को यहाँ लिखकर मैं उसके सही या गलत होने पर कोई टिपणी नहीं कर सकती। इस वाक्य का यहाँ होना हममें से ज्यादातर लोगों का इस पर विश्वास दर्शाता है। और यह विश्वास सही भी है। इतने साल JEE के लिए मेहनत कर एक अच्छे कॉलेज में आकर माता-पिता के इतने पैसे खर्च कर खुद से एक अच्छे प्लेसमेंट की आशा बिलकुल गलत नहीं है। लेकिन इस आशा के कारण खुद पर ज्यादाती करना गलत है। आखिरकार, हमें राजू नहीं बल्कि रेंचो बनना है। उम्मीद है कि आप इस वाक्य की गहराई को समझें और अपनी पढ़ाई पर दोबारा लग जाएं (इस newsletter को पढ़ने के बाद) लेकिन इस बार डर की वजह से नहीं बल्कि कुछ सीखने के लिए या उस कोर्स में अपने सुधार के लिए।

इस न्यूज़लैटर में आप पाएँगे –

- ICICI बैंक, ऑलिवर वायमन, Exxon Mobil व माइक्रोसॉफ्ट में प्लेसड लोगों के साक्षात्कार
- प्लेसमेंट यूनिट द्वारा कराई गई टॉक के कुछ मुख्य बिंदु
- कैंपस से मुख्य कंपनियों में इंटरशिप पाने वाले कुछ लोगों से हुई HPC की बातचीत के मुख्य अंश
- PU कोऑर्डिनेटर व JPC कोऑर्डिनेटर के इंटरव्यू
- डायरेक्टर माननीय श्री अशोक सरकार सर का इंटरव्यू

कॉम्प्री के लिए शुभकामनाएँ!

संपादकीय टीम

मितुल, आशुतोष

निमिषा, जयंत, अक्षिता, कनिष्क

नितिन, श्यामल, अतीक्षा, भूमि, अमोल, रीतिक, आदित्य, सिद्धार्थ, कृति, प्रखर, व्योम

मानस, माणिक्य, प्रत्युष, मनाल, मोहनीश, आकाश, वत्सल, आदित्य, अनुज

आर्यन, अदिति, भूषण, हार्दिक, हर्ष, हेमांग, परीश्री, रेहान, संस्कार, लाम्बा, वासू, अमिताभ, अपूर्वा

साक्षात्कार- ए.के.सरकार (डाइरेक्टर)

प्रश्न: इस सेमेस्टर के प्लेसमेंट को लेकर आपके क्या विचार हैं? क्या यह आशाओं के अनुकूल थी?

प्रोफ़. सरकार: मेरी जानकारी के अनुसार इस साल प्लेसमेंट्स बहुत अच्छे रहे हैं, बस हायर डिग्री के प्लेसमेंट में थोड़े सुधार कि गुंजाइश है। सामान्य प्रवृत्ति के अनुसार छात्र अक्सर कोर को छोड़ कर, IT सेक्टर से प्रभावित होते हैं, क्योंकि कोर कंपनी शुरुआत में ज्यादा पैकेज नहीं देती हैं। मेरा मानना है कि विद्यार्थियों को अपनी दिलचस्पी का अनुसरण करना चाहिए, न कि अच्छे पैकेज के लिए जद्दोजहद करनी चाहिए।

प्रश्न: क्या निकट भविष्य में BITSAT या BITS Counseling प्रक्रिया में कोई बदलाव लाने की योजना है?

प्रोफ़. सरकार: जैसा BITSAT अभी है, यह भविष्य में बिलकुल कारगर साबित नहीं होगा। इस परीक्षा से विद्यार्थियों की पूर्ण क्षमता का पता नहीं चल पाता है। हमारे मन में यह लक्ष्य है, कि हम परीक्षा में उपस्थित होने वाली छात्रों की अभियांत्रिकी के प्रति रुचि को एक बेहतर और व्यापक रूप से मापित कर पाएँ। हम इस पर सोच रहे हैं और जल्द ही हमारे स्तर से बदलाव प्रस्तावित किए जाने की संभावना है।

प्रश्न: Vision 2020 के उद्देश्यों को किस प्रकार लागू किया जा रहा है?

प्रोफ़. सरकार: VISION 2020 के बहुत सारे अंग हैं, जैसे कि अनुसंधान और अन्वेषण (Research and Innovation), संकाय विकास (Faculty Development), इत्यादि। अनुसंधान क्षेत्र में हम फ़िलहाल बहुत अच्छा कर रहे हैं। बिट्स के कुछ छात्र बिट्स के लिए ही रिसर्च भी कर रहे हैं। अन्वेषण में हमने जितना पिछले दस वर्षों में हासिल किया है, वह सराहनीय है, यह प्रगति आगे और भी तेज़ गति से बढ़ेगी। हमने पहले भी M.E. डिग्री के लिए कई नए कार्यक्रम लागू किए हैं। हम पढ़ाई के स्वरूप को और पढ़ने के तरीके में बदलाव लाने को लेकर प्रयासरत हैं। हाल ही में हमने WILP में भी कई सारे सकारात्मक बदलाव किए हैं, जिसके अंतर्गत हम अब छात्रों को प्रमाण पत्र भी दे रहे हैं।

प्रश्न: क्या वर्तमान में BITS किसी राष्ट्रीय/अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय से कोई नए MOU हस्ताक्षरित करने की योजना बना रहा है?

प्रोफ़. सरकार: हमने कई सारे विश्वविद्यालयों से MOU हस्ताक्षरित किए हैं। नए MOU हस्ताक्षर करने में अब हम थोड़ा ज्यादा चुनाव करने लगे हैं। हम सिर्फ़ उन्हीं विश्वविद्यालयों से संधि करते हैं जो कि अपनी भागीदारी में सक्रियता प्रदर्शित करते हों। कई सारे विद्यार्थी इसी संधि की वजह से वहाँ जाते हैं और उन विश्वविद्यालयों के छात्र यहाँ आकर अध्ययन करते हैं। वर्तमान में बिट्स की जिन भी विश्वविद्यालयों से संधि है, वह सराहनीय है। किसी नए MOU पर हस्ताक्षर करने से पहले सभी छात्रों को जरूर सूचित किया जाएगा, आखिर यह उनके ही विकास के लिए किया जा रहा है।

प्रश्न: क्या बिट्स के पाठ्यक्रम का पुनः सृजन करने की निकट भविष्य में कोई योजना है?

प्रोफ़. सरकार: आखरी बार हमारे कोर्स में 2011 बदलाव किए गए थे। BITS की मुख्यतः दो विशेषताएँ हैं 'FLEXIBILITY' और 'PS'। मैं चाहूँगा कि इसमें कुछ सकारात्मक बदलाव हों, और होने भी चाहिए। अभी का छात्रों का पढ़ने का तरीका भविष्य के लिए बिलकुल अनुकूल नहीं है।

प्रश्न: बिट्स Alumni की पिछले वर्षों में बिट्स के विकास में क्या भूमिका रही है?

प्रोफ़. सरकार: पिछले कई वर्षों में Alumni ने इस संस्थान की बहुत मदद की है। एक निजी संस्थान होने की वजह से हमें सरकारी कॉलेज जितने संसाधन प्राप्त नहीं होते हैं। और गत वर्षों में Alumni का योगदान तारीफ़ के काबिल है। अनुसंधान के क्षेत्र में उनकी द्वारा की गई मदद आज साफ़ झलकती है। उन्होंने बिट्स की ही कुछ टेक टीमों की भी सहायता की है जिसके लिए छात्र उनके प्रति कृतज्ञ हैं।

प्रश्न: आपके अनुसार बिट्स की NIRF रैंकिंग के लगातार नीचे जाने का क्या कारण है? इस परिस्थिति को काउंटर करने के लिए क्या कदम उठाए जा रहे हैं?

प्रोफ़. सरकार: NIRF की सूची बहुत सारे कारणों पर निर्भर करती है, जैसे की पढ़ाना और सीखना, अनुसंधान और प्रकाशन, प्लेसमेंट, छात्रों की विविधता और उनकी अनुभूति। NIRF अपनी सूची में एक संस्थान को छात्र और अध्यापक अनुपात के आधार पर अंक देता है। बिट्स के अध्यापकों को चुनने की प्रक्रिया अत्यंत जटिल है। जिस वजह से हमें इसमें सामान्य से ज्यादा समय लगता है। अनुसंधान क्षेत्र में हमने पिछले दस सालों में बहुत अच्छा किया है। प्रकाशन की लिए सरकारी विश्वविद्यालयों के पास अच्छी मात्र में ग्रांट्स मौजूद होती है, जिसके कारण उनके द्वारा किए गए प्रकाशनों की संख्या ज्यादा होती है। उल्लेखनीय है कि, क्योंकि बिट्स में योग्यता के अनुसार दाखिला होता है, इसलिए छात्र विविधता में हमें ज्यादा अंक नहीं मिलते हैं, वहीं सरकारी कॉलेज में category के आधार पर भी दाखिला मिलता है, जिस वजह से वहाँ विविधता ज्यादा होती है। अनुभूति के क्षेत्र में हमारा प्रदर्शन बहुत अच्छा रहा है। NIRF सूची में बिट्स के स्थान को देखकर, उसकी उत्तमता पर सवाल उठाना बिलकुल भी ठीक नहीं है।

साक्षात्कार- कौशिक श्रीनिवासन (पी.यू. चीफ़)

प्लेसमेंट के सन्दर्भ में पी.यू. के कार्यों का विश्लेषण आप कैसे करेंगे और इसमें आपकी भूमिका क्या रही?

उत्तर: पी.यू. छात्रों के लिए एक 'Launchpad' प्रदान करता है जिसकी मदद से वे अपने पैरों पर खड़े हो सकें। चाहे बात एक बहुराष्ट्रीय कंपनी में 9-5 नौकरी की हो या किसी अंतर्राष्ट्रीय यूनिवर्सिटी में अनुसंधान की, पी. यू. की यह ज़िम्मेदारी है कि वह हर विद्यार्थी की आशा के अनुकूल उसे तैयार करे। कभी-कभी ऐसा हो जाता है कि मात्र एक छात्र के लिए किसी कंपनी को बुलाना कठिन हो परन्तु तब भी उस छात्र को उन तक पहुँचने में मदद करना पी.यू. के मुख्य कार्यों में से एक है। जहाँ तक बात मेरी आती है तो मैं अपने कार्य को दो मुख्य भागों में विभाजित कर सकता हूँ। सर्वप्रथम आता है एक सही रणनीति बनाना जो हर क्षेत्र पर ध्यान दे – Logistics, Pitching और Training हम पिछले सालो कि गलतियों को देख कर इस साल हेतु मैदान तैयार करते है। तत्कालीन वर्ष के विद्यार्थियों की रुचि जानने हेतु हम Interest Capture Form इस्तेमाल करते है जिससे हमारे लिए कंपनियों को शॉर्टलिस्ट करना आसान हो जाए। इसी के साथ Training का दौर भी शुरू होता है। लोगों के इंटेरेस्ट और उनके ब्रांच को मद्देनज़र रखते हुए उन्हें सही सलाह दी जाती है कि उन्हें किन बातों पर ध्यान देना चाहिए और कौन कौन सी इलेक्टिवेस को पूरा करना चाहिए। जहाँ एक ओर सही रणनीति महत्वपूर्ण है, वही यह भी अत्यंत आवश्यक है कि हम बिट्स में और खास कर पी.यू. में सही Culture बनाए रखें। हम यह नहीं भूल सकते कि सभी सदस्य स्वयं भी इन्ही प्लेसमेंट्स की तैयारी में लगे हैं, अतः यह बात भी ध्यान में रखनी आवश्यक है कि काम करते करते वे अपने आप को ना भूल जाये।

कंपनियों को आमंत्रित करने की प्रक्रिया कैसी होती है और ऐसा क्यों होता है कि कुछ कंपनियां जो पहले आती थी अचानक आना बंद कर देती है?

उत्तर: विद्यार्थियों द्वारा भरा गया Interest Capture Form ऐसे में हमारी मदद करता है। उसके माध्यम से हम यह सुनिश्चित करते हैं कि किस सेक्टर में कितने छात्र रुचि रखते हैं। तत्पश्चात पिछले सालों के आंकड़ों के सहारे हम दांव लगाते हैं कि कितनी कंपनियों को बुलाना अनिवार्य है, उनमें से कितनी कंपनियां प्लेसमेंट के लिए उपस्थित होंगी और साथ ही वे कितने लोगों को लेने में रुचि रखते हैं। हमारे पास कई कंपनियों के संपर्क रहते हैं और उन्हीं के माध्यम से हम उन्हें आमंत्रित करते हैं। जहाँ तक बात कुछ कंपनियों का अक्समात आना बंद कर देने की है तो उसके पीछे कारण छात्र ही है। अगर किसी छात्र को कोई कंपनी एक नौकरी दे पर साल के अंत में वह किसी और कंपनी में चला जाए जो संभवतः उसे बेहतर पोस्ट दे रही हो, तो कंपनियों का विश्वास कॉलेज से उठ जाता है। इस साल Sandisk के साथ कुछ ऐसा ही हुआ।

आज के सन्दर्भ में ऐसा देखा गया है कि बहुत सारे विद्यार्थी Non-Core और Off-Campus प्लेसमेंट से प्रभावित रहते है। इस पर आपकी क्या राय है?

A7 के विद्यार्थी ज़्यादातर IT में प्रवेश करते हैं परन्तु जब बात A3,A8 के छात्रों की आये तो ऐसा देखा गया है कि कुछ लोग ही ET नौकरियों के लिए जाते हैं, बाकी सब IT या Analytics कि ओर ही आकर्षित होते हैं।

इसके पीछे मुख्य कारण है IT के आकर्षक पैकेज। कुछ जन ऐसे भी होते हैं जिन्हें Core में कठिनाइयाँ आती हैं, अतः वे लोग Analytics या Consulting को चुनते हैं। जब बात A1, A4 और अन्य शाखाओं की आए तब यह बात समझना आवश्यक है कि उनके लिए आने वाली कंपनी की संख्या तो कम है ही, परन्तु साथ ही उन्हें मिलने वाले पैकेज भी अधिकतम समय उनकी आशा से कम होते हैं। साथ ही, अब छात्रों की रुचि भी Core में खास नहीं बची है। इसका सीधा परिमाण हमें इस वर्ष देखने को मिला जब केमिकल की कंपनी SRF बिट्स आई पर कोई भी विद्यार्थी उनकी परीक्षा में सफल न हो पाया।

इस सेमेस्टर के प्लेसमेंट अब खत्म होने को आए हैं, इस पूरी प्रक्रियाको एलकेकर आपका अनुभव कैसा रहा?

यह वर्ष हर वर्ष से अलग रहा है। प्रथम दिन, हमें कुल 74 प्रस्ताव मिले जो आज तक के बिट्स के इतिहास में सबसे अधिक हैं। पिछले वर्ष के 53 ऑफर से इस वर्ष 74 ऑफर तक पहुँचना अपने आप में एक बड़ी उपलब्धि है। साथ ही इस वर्ष Core कोमपनियों की संख्या में उछाल देखने को मिला है। इस वर्ष, गूगल जैसी कंपनी जो पिछले 2-3 वर्षों से केम्पस पर नहीं आई थी, इस साल वापस आती दिखी। दुःख सिर्फ़ इस बात का रह गया कि इस सेम हम किसी भी अंतर्राष्ट्रीय कंपनी को लाने में असफल रहे। आशा है कि अगले सेमेस्टर में वे आएंगी।

आपके अनुसार एक अच्छी प्लेसमेंट के लिए CGPA क्या महत्व रखता है?

इस बात में कोई शक नहीं है कि हम कितना ही कहें, परन्तु जब बात प्लेसमेंट की आती है, तब आपकी CG बाकी हर बात से ऊपर लिखी होती है। साथ ही कई कंपनी ऐसी भी होती हैं जो एक न्यूनतम CG की शर्त रखती हैं। आंकड़ों की मानें तो 8.5-9 की CG आपको एक सुरक्षित ढाँचे में रखती है। 8.5-9 की CG लाना उतना मुश्किल भी नहीं होता है। ऐसे में आप पढ़ाई के साथ साथ अन्य क्लब और डिपार्टमेंट में भी सक्रिय रह सकते है। यदि आप निश्चित कर चुके हैं कि आपको यहाँ से निकलते ही उच्च-शिक्षा के लिए प्रयत्न करना है, तब आप सब कुछ त्यागकर अपनी पढ़ाई में जुटे रहिए। अंत में मेरा यही मानना है कि यह सब आपकी अपनी रणनीति और आपके लक्ष्य पर निर्धारित है। पर हाँ, एक अच्छी CG कभी आपके आड़े नहीं आएगी।

आपके अनुसार कैम्पस पर क्लब और डिपार्टमेंट का छात्रों पर क्या असर पड़ता है?

सर्वप्रथम मेरा यह मानना है कि प्रत्येक क्लब या डिपार्टमेंट छात्र की व्यक्तित्व विकास में एक अहम भूमिका निभाता है। यह आपको मौका देता है कि आप अपने आप को पहचान सकेन और यह जान सकें कि आपकी रुचि किन चीजों में है। मेरा यह भी मानना है कि कई बार कहीं-न-कहीं लोग अपने क्लब अथवा डिपार्टमेंट के काम में इतने घुल जाते हैं कि उन्हें यह दुनिया ही बेहतर लगने लगती है। यह भी एक कारण है कि आज इतने लोग Analytics और Management की नौकरियों की ओर आकर्षित हैं। मेरा यह मानना है कि शायद कैम्पस में टेक्नीकल क्लबों की कमी की वजह से यह हो रहा है।

प्रथम और द्वित्य वर्षीय छात्रों को आप क्या सन्देश देना चाहेंगे?

मेरे अनुसार वे अभी उम्र के उस दौर में है जहाँ उन्हें सब कुछ देखना और सुनना चाहिए। उन्हें ज़्यादा से ज़्यादा Talks में आना चाहिए और लोगों से उनकी कहानियाँ और खामियाँ समझनी चाहिए। ऐसा देखा गया है कि लोग सिर्फ़ तीसरे वर्ष में आकर ही इन पहलुओं पर ध्यान देते हैं। प्रथम और द्वित्य वर्ष तो होते ही इसलिए हैं, कि छात्र अपने सहपाठी और अग्रजों से बातें करें और अपनी रुचि को पहचानें। अंत में मैं यही कहूँगा कि यह आप पर निर्भर करता है कि आप कॉलेज से क्या चाहते हो। कॉलेज शायद आपको वह दे भी दे पर उस मौके को समय रहते अपने हित में मोड़ना आपको स्वयं सीखना होगा।

मैकेनिकल (कोर) - अनिरुद्ध

हिंदी प्रेस क्लब को हिंदुस्तान यूनिटीवर्क लिमिटेड (HUL) में इंटरशिप प्राप्त कर चुके तृतीय वर्षीय मैकेनिकल इंजीनियरिंग छात्र, अनिरुद्ध कृष्णा का साक्षात्कार लेने का अवसर प्राप्त हुआ। हिंदुस्तान यूनिटीवर्क लिमिटेड में इंटरशिप प्राप्त करना दो मामलों में अद्भुत है; पहला, की HUL एक 'कोर' कंपनी है जो प्लेसमेंट यूनिट के प्रयासों से प्रथम बार इंटरशिप के लिए बिट्स पिलानी आई। अपने पाठकों को बता दें कि इसके पूर्व यह कंपनी इंटरशिप के लिए केवल आई.आई.टी. और आई.आई.एम. में ही जाती थी। अनिरुद्ध, बिट्स पिलानी के अकेले ऐसे छात्र हैं जिनको हिंदुस्तान युनिटीवर्क लिमिटेड ने इस वर्ष इंटरशिप के लिए चयनित किया है।

पेश हैं उनके साथ हुई बातचीत के कुछ अंश :

हिंदी प्रेस क्लब: अपनी HUL की साक्षात्कार प्रक्रिया के बारे में कुछ बताएँ।

अनिरुद्ध : इंटरव्यू के दौरान चयनकर्ताओं का जोर उम्मीदवारों की तकनीकी पृष्ठभूमि पर था। उनका इस बात पर भी ध्यान था कि विद्यार्थियों को Practice School-1 के दौरान किए प्रोजेक्ट के बारे में कितनी जानकारी है। वे यह नहीं चाहते थे कि छात्रों को सब कुछ पता हो, लेकिन उनका ध्यान मुख्य रूप से छात्रों के रेज्युमे में उल्लिखित बिन्दुओं के गहन ज्ञान पर था।

हिंदी प्रेस क्लब: इस चयन के लिए, प्लेसमेंट यूनिट की क्या भूमिका रही है?

अनिरुद्ध: HUL को बिट्स पिलानी में लाने के लिए प्लेसमेंट यूनिट ने बहुत मेहनत की। उन्होंने उन IITs और IIMs से बात की थी जहाँ HUL पिछले कुछ वर्षों में इंटरशिप के लिए जाती रही है। उसके आधार पर उन्होंने हमें बताया कि इंटरव्यू के लिए कैसे तैयारी करनी है। उन्होंने इंटरशिप के लिए एक विशेष उन्मुखीकरण सत्र का आयोजन भी किया।

हिंदी प्रेस क्लब: आपकी राय में इंटरशिप प्राप्त करने के लिए CGPA की क्या अहमियत होती है?

अनिरुद्ध: HUL ने उम्मीदवारों के लिए कोई न्यूनतम CGPA नहीं राखी थी, लेकिन फिर भी मेरा मानना है कि कम से कम 7 CGPA होनी चाहिए। न्यूनतम सीजी पार होने के बाद सब कुछ निर्भर करता है, आपके रेज्युमे पर और सिलेक्शन प्रक्रिया के दौरान आपके प्रदर्शन पर।

हिंदी प्रेस क्लब: एचयूएल(HUL) की सिलेक्शन प्रोसेस के बारे में बताएं

अनिरुद्ध: कंपनी ने उम्मीदवारों को उनके रेज्युमे के आधार पर शॉर्टलिस्ट किया। कंपनी की प्रेजेंटेशन के तुरंत बाद ग्रुप डिस्कशन का आयोजन किया गया, जिसमें हमें एक केस स्टडी दी गई और उससे संबंधित तीन प्रश्न पूछे गए। इस के बाद अगले दिन टेक्निकल इंटरव्यू हुआ जिसमें, हमारे मनपसंद विषय (जो कि इलेक्ट्रिक्स में थे) उनके बारे में सवाल पूछे गए, जो कि पूर्ण रूप से तकनीकी थे। इस राउंड कि शॉर्टलिस्टिंग के बाद HR इंटरव्यू लिया गया। मैं आपके पाठकों को यह बताना चाहूँगा कि दोनों टेक्निकल इंटरव्यू में वह यह जानना चाहते थे कि उम्मीदवारों द्वारा दिए गए समाधान, ग्राहक के लिए कितने उपयोगी प्रतीत होंगे। आखिर में फिर से एक केस स्टडी दी गई और उसमें टेक्निकल सवाल पूछे गए। HR इंटरव्यू में केवल सामान्य प्रश्न ही पूछे गए थे।

हिंदी प्रेस क्लब: आपका रेज्युमे दूसरों से कैसे अलग था?

अनिरुद्ध: मैंने भारतीय रेलवे के साथ अपने PS1 में Alternate Fuels से संबंधित एक प्रोजेक्ट किया था जिससे मुझे बहुत मदद मिली। इसके अलावा मेरे रेज्युमे में, दो POR उल्लिखित थे, जिनके बारे में मुझे सवाल पूछे गए। मैं अपने कोर सबजेक्ट्स में बहुत मजबूत था, जिसका मुझे पूरा फायदा मिला।

हिंदी प्रेस क्लब: आप अपने जूनियर्स को क्या टिप्स देना चाहेंगे?

अनिरुद्ध: CGPA बहुत महत्वपूर्ण है, पर यह पूर्ण निर्धारक नहीं होता है। एक अच्छी CGPA होना आपको औरों से अलग करता है। अपने रेज्युमे में केवल वही इलेक्ट्रिकल लिखें जोकि उस प्रोफाइल के लिए प्रासंगिक हो। कोर में असीमित अवसर उपलब्ध हैं। लेकिन इसके लिए आपको कोर इंजीनियरिंग की संकल्पनाएँ पूर्ण रूप से मन में स्पष्ट होनी चाहिए।

EEE/ENI - वर्षा सिंधानिया

गूगल हार्डवेयर में इन्टरशिप प्राप्त कर चुकी ENI की छात्रा, वर्षा सिंधानिया ने हिंदी प्रेस क्लब से हुई बातचीत के दौरान इस सन्दर्भ में अपने विचार व्यक्त किए।

इन्टरशिप प्रक्रिया के बारे में उन्होंने बताया कि हर कम्पनी इसे अपनी आवश्यकता के अनुसार विभाजित करती है। आमतौर पर रेज्युमे शॉर्टलिस्टिंग से शुरुआत की जाती है, जिसके बाद चुनिंदा छात्रों को एक कम्पनी द्वारा आयोजित एक परीक्षा देनी होती है। इसके पश्चात साक्षात्कार हेतु चुनिन्दा छात्रों को बुलाया जाता है। जहाँ तक बात गूगल हार्डवेयर की है, तो मुख्यतः वे रेज्युमे के आधार पर विद्यार्थियों का चयन कर इंटरव्यू के लिए आमंत्रित करते हैं। अंत में HR राउंड के माध्यम से चुने गए छात्रों को कंपनी इन्टरशिप प्रदान करती है।

इसी बीच बात आती है C.G.P.A. की। वर्षा ने बताया कि गूगल हार्डवेयर जैसी उच्चस्तरीय कंपनियां C.G.P.A. को पहली प्राथमिकता देती हैं। इस वर्ष के cut-off से यह बात साफ झलकती है जोकि 9.18 रहा।

बिट्स पिलानी में सबसे कठिन मानी जाने वाली शाखाओं में से एक, ENI का अभ्यास कर रही वर्षा का मानना है, कि इस मुकाम को हासिल करने हेतु कोई सख्त अनुसूची बनाने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि हर किसी का एक अपना तरीका होता है – किसी के लिए कक्षाएं पर्याप्त होती हैं तो कुछ लोग बिना कक्षा जाए भी अव्वल आ जाते हैं। कम समय में एकाग्रता से पढ़ना ही वर्षा का मुख्य लक्ष्य रहा ताकि बाकी समय वे और भी अन्य सार्थक कार्यों को दे सकें।

मैकेनिकल (कोर) - भाग्येश त्रिवेदी

प्रश्न- अपनी इंटरशिप के बारे में बताएँ।

उत्तर- मेरी इंटरशिप बजाज मोटर्स (पुणे) में लगी है। मेरी इंटरशिप की प्रोफाइल R&D है, एवं मेरा वेतन(Stipend) 20,000 प्रति माह है।

प्रश्न- चयन की प्रक्रिया के बारे में बताएँ।

उत्तर- चयन प्रक्रिया तीन भागों में विभाजित होती है। प्रथम भाग एक ऑनलाइन क्विज़ है जिसमें लॉजिक, एप्टीट्यूड के साथ 50% प्रश्न मैकेनिकल (कोर) के होते हैं। बाकी दो भाग साक्षात्कार के होते हैं, जिसमें पहले साक्षात्कार एक पर्सेनलिटी टेस्ट होता है, जबकि दूसरा साक्षात्कार मुख्यतः तकनीकी प्रश्नों पर आधारित होता है।

प्रश्न- आप कौन-कौनसे क्लब व डिपार्टमेंट में हैं एवं उनका अच्छी इंटरशिप मिलने में कितना योगदान होता है?

उत्तर- मैं प्रथम वर्ष में फोटोग में था किन्तु प्रथम वर्ष के बाद मैंने वह क्लब छोड़ दिया। इसके साथ मैं इन्स्पायर्ड कार्टर्स एफएस (Inspired Kartars FS) का सदस्य हूँ। मेरे विचार में टेक-टीम में होने का मुझे बहुत लाभ मिला।

प्रश्न- CG का एक अच्छी इंटरशिप मिलने में कितना योगदान होता है।

उत्तर- मेरे विचार में 7 CG इंटरशिप में बैठने के लिए पर्याप्त है। इसके अतिरिक्त अच्छी इंटरशिप के लिए आपके पास व्यावहारिक ज्ञान होना आवश्यक है, खासकर मैकेनिकल (कोर) के लिए यह बात कई गुना आवश्यक हो जाती है।

IT इंटरशिप - पार्थ गोविल

डे ज़ीरो के दिन आई कंपनी DE SHAW ने ENI ब्रांच के पार्थ गोविल को इंटरशिप के लिए चुना। उनसे बातचीत के दौरान उन्होंने बताया कि जिनके पास कंप्यूटर साइंस नहीं होती उन्हें कंपनी में इंटरशिप मिलने में थोड़ी मुश्किलें आती हैं, लेकिन अगर वे कड़ी मेहनत करें और अपनी प्रश्न हल करने की क्षमता को बढ़ाते रहें तो वह अपने लक्ष्य तक आसानी से पहुँच सकते हैं। इंटरशिप के कार्यक्रम के दौरान एक छात्र को तीन चरणों से गुजरना पड़ता है। पहला चरण एक ऑनलाइन टेस्ट होता है जिसमें अलग-अलग सवालों को कोड लिखकर हल किया जाता है। बाकी दो चरण टेक्निकल इंटरव्यू पर आधारित होते हैं जिसमें भी 40-50 प्रतिशत तक आपकी प्रश्न हल करने की क्षमता ही काम आती है। इन सब के अलावा उन्होंने बताया कि हर छात्र, जो एक अच्छी IT कंपनी में इंटरशिप चाहता है, उसकी किसी भी एक कोडिंग भाषा पर अच्छी पकड़ होनी चाहिए और उसे OOP (Object Oriented Programming) और DSA (Data Structures And Algorithms) जैसे विषय भी अच्छे से आने चाहिए। पार्थ की DSA पर अच्छी पकड़ होने के चलते उन्हें काफ़ी लाभ हुआ। उनका मानना है कि अगर कोई भी छात्र लगातार कोडिंग का परिश्रम करेगा तो उसकी गलतियाँ दिन-ब-दिन कम होती जाएँगी और वह उसमें और बेहतर होता जाएगा। कोडिंग करने के लिए कोई भी प्लैटफ़ॉर्म चुना जा सकता है बस परिश्रम नहीं रुकना चाहिए। पार्थ अतिरिक्त पाठ्यक्रम गतिविधियों (Extracurricular Activities) से भी थोड़ा दूर ही रहते थे और उनके अनुसार इसके चलते एक छात्र को किसी भी प्रकार की तैयारी करने के लिए अनुकूल समय मिलता है। उनका मानना है कि एक छात्र को उन्ही सब कक्षाओं में जाना चाहिए जिसे वह महत्वपूर्ण समझे। CG के विषय पर उन्होंने बताया कि इंटरशिप के दौरान 90 प्रतिशत कंपनियों के लिए कट-ऑफ़ 7 होती है और बाकियों 8 या 8.5। पार्थ ने DE SHAW में इन्टरशिप हासिल करके यह बता दिया है कि अगर आपकी ब्रांच कंप्यूटर साइंस नहीं है उसके बावजूद भी आप अपनी मेहनत और समय के सदुपयोग से आईटी में एक अच्छी इन्टरशिप हासिल कर सकते हैं।

इंटरशिप के पहले सेमेस्टर के समन्वयक जेयिस थॉमस से बातचीत के दौरान उन्होंने बताया कि इंटरशिप का सिलसिला सितंबर के महीने से ही शुरू हो जाता है। Day 0 की शुरुआत D.E Shaw जैसी बड़ी कंपनियों से हुई, उससे कुछ दिन पहले Bajaj Auto, HUL और ExMobile जैसी कंपनियां core के लिए आ

चुकी थी। Day 1 पर भी दस बड़ी कंपनियां आयी और आगे के दिनों में कई बड़ी कंपनियां देखने को मिली। पिछले साल के मुकाबले इस साल core और इलेक्ट्रॉनिक सेक्टर में ज्यादा कंपनियां आयी। कुछ बड़ी कंपनियां जैसे Amazon नहीं आई जिसकी बड़ी वजह थी इंटरशिप का कार्यक्रम देर से शुरू करना, और देरी इसलिए हुई क्योंकि प्लेसमेंट का कार्यक्रम पहल से ही हो रहा था और इंटरशिप को उसके साथ नहीं शुरू कर सकते थे। यह सब काम का सही तरह से संचालन करने के लिए दो विभाग बनाए जाते हैं जो इंटरशिप और प्लेसमेंट दोनों में काम करते हैं। पहला है PUCC और दूसरा JPCI JPC, PUCC के अंदर ही काम करता है। जेयिस से हमें यह भी पता चला कि अगर किसी छात्र की तीसरे वर्ष में इंटरशिप लग जाती है तो वह चौथे वर्ष के पहले सेमेस्टर में प्लेसमेंट के लिए नहीं बैठ सकता। इस नियम के चलते दोनों सेमेस्टर में लगभग बराबर छात्र प्लेसमेंट्स के लिए बैठते हैं।

फिर उन्होंने बताया कि अगर किसी छात्र को इंटरशिप में ही 'P.P.O.' मिल जाता हो और वह उसे स्वीकार कर लेता है तो वह प्लेसमेंट्स के लिए नहीं बैठ सकता। 'C.G.' के मायने की बात करे तो वह सिर्फ तब तक है जब तक आप किसी कंपनी का cutoff पार नहीं कर लेते, एक बार आपने cutoff पार कर लिया फिर आपके काम की अहमियत बढ़ जाती है और C.G. की घट जाती है। अंत में जेयिस ने हमें प्लेसमेंट्स कम होने का कारण भी बताया, उन्होंने इसका जिम्मेदार कंपनियों की कम आर्थिक विकास को ठहराया जो कि सिर्फ BITS की ही नहीं बल्कि देश में हर कॉलेज की दुविधा है।

स्टूडेंट अकादमिक सेल, बिट्स पिलानी द्वारा 6 नवंबर, 2019 को एक 'प्लेसमेंट टॉक' का आयोजन करवाया गया। टॉक में कैंपस से अच्छी प्लेसमेंट प्राप्त करने वाले छात्रों ने अपने अनुभव सभी के साथ साझा किए। सभी वक्ताओं ने छात्रों के प्लेसमेंट से जुड़े विभिन्न सवालों के उत्तर दिए और उनका मार्गदर्शन किया। दोनों कोर एवं नॉन-कोर क्षेत्र से वक्ता टॉक में मौजूद थे जिससे छात्रों को दोनों ही क्षेत्रों में आगे आने वाली चुनौतियों और उनके लाभ के बारे में भी जानकारी मिली। टॉक को दो भागों में आयोजित किया गया- 'ET' सेक्टर और 'IT' सेक्टर।

पी. यू. टॉक

ET सेक्टर से दो वक्ताओं को आमंत्रित किया गया था - आदित्य गोयल और अक्षित गुप्ता। दोनों ही वक्ताओं ने कोर क्षेत्र में प्लेसमेंट प्राप्त किया है। आदित्य और आकाश, दोनों की प्लेसमेंट जानी मानी तकनीकी कंपनी 'समसंग सेमीकंडक्टर' में हुई है। वक्ताओं ने रिज्यूम बनाने, इंटरव्यू प्रक्रिया एवं अध्ययन विषयों जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा की और अन्य ET क्षेत्र के छात्रों को कोर-प्लेसमेंट को बढ़ावा देने के लिए प्रेरित किया।

IT सेक्टर से चार वक्ताओं को आमंत्रित किया गया था - आकांषा मिश्रा, आकाश लखेरा, आयुष शर्मा और गुरजीत सिंहा। जहां आकांषा और आकाश कोर क्षेत्र से हैं, वहीं दूसरी ओर आयुष और गुरजीत ने नॉन-कोर क्षेत्र से प्लेसमेंट हासिल की है। आकांषा का प्लेसमेंट गूगल में हुआ है, आकाश और गुरजीत का माइक्रोसॉफ्ट में एवं आयुष ने ऊबर में सफलता प्राप्त की। वक्ताओं ने प्लेसमेंट में तकनीकी विषयों, रिज्यूम और प्लेसमेंट की प्रक्रिया के बारे में जानकारी साझा की। टॉक के बाद वक्ताओं ने छात्रों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर भी दिए।

हालांकि 'ET' सेक्टर की टॉक के समय दर्शक कुछ कम थे, परंतु 'IT' सेक्टर की बारी आते-आते पूरा हॉल दर्शकों से खचा-खच भर गया। टॉक काफी प्रेरणादायक रही और सभी छात्रों को प्लेसमेंट के बारे में टॉक से बहुत कुछ सीखने को मिला। वक्ताओं ने अपने-अपने सेक्टर की तकनीकी परीक्षा के लिए महत्वपूर्ण विषयों के बारे में भी विस्तार से जानकारी दी। तकनीकी परीक्षा के बाद होने वाले तकनीकी साक्षात्कार में कैसे प्रश्नों का उत्तर देना है और किस प्रकार साक्षात्कार को अपने हिसाब से ढालना है, इस बात पर भी सभी वक्ताओं ने काफी चर्चा की। HR साक्षात्कार के लिए भी सभी वक्ताओं ने कुछ-कुछ टिप्स साझा की। CGPA को बेहतर करने का एक सुझाव सभी वक्ताओं ने दिया और साथ ही उसकी अहमियत भी समझाई। टॉक में प्रयोग की गयी प्रेजेंटेशन स्टूडेंट अकादमिक सेल की आधिकारिक वेबसाइट <https://sacbitspilani.wordpress.com> पर उपलब्ध है। स्टूडेंट अकादमिक सेल द्वारा किया गया यह प्रयास सराहनीय है। इन प्रयासों से आने वाले समय में कॉलेज की प्लेसमेंट का स्तर और बढ़ता हुआ-सा दिखाई देता है।

प्रश्न:- आपकी प्लेसमेंट की प्रक्रिया के बारे में कुछ बताएँ।

पहला चरण स्क्रीनिंग प्रक्रिया का होता है जिसमें लगभग 200 लोग भाग लेते हैं। इन 200 लोगों में से करीब पाँच प्रतिशत लोग अगले चरण के लिए चुने जाते हैं। अगले चरण में चुने गए लोगों को व्यक्तिगत साक्षात्कार के लिए बुलाया जाता है, जो कि हमारे लिए करीब तीन हफ्तों बाद लिया गया था। उस दिन मेरे तीन साक्षात्कार लिए गए थे। मेरा चयन Oliver Wyman में हुआ है और अभी मुझे McKinsey से भी प्रस्ताव आया है।

प्रश्न:- प्लेसमेंट्स के लिए आपके द्वारा की गई तैयारियों के बारे में कुछ बताएँ।

तैयारियाँ इस बात पर निर्भर करती हैं कि आप कॉलेज के किस वर्ष में हैं। मॉक-साक्षात्कार आपको तैयारियों में काफी मदद करता है। इसके अलावा बहुत सारी किताबें भी हैं जिससे आपको मदद मिल सकती है।

क्या आप किसी क्लब या डिपार्टमेंट के सदस्य हैं? यदि हाँ तो पढ़ाई के साथ आपने उनका काम कैसे संभाला?

हाँ, मैं बॉसम स्पॉन्ज़ का CoSSAc रह चुका हूँ और 180DC में उपाध्यक्ष के पद पर भी मैं रह चुका हूँ। इसमें मैं अपने दूसरे वर्ष में शामिल हुआ था। इससे मुझे बहुत मदद भी मिली, क्योंकि इसके काम के दौरान मेरी कई लोगों से बात होने लगी थी जिससे मुझे मेरे व्यक्तित्व को निखारने का मौका मिला।

प्रश्न:- कई सारे विद्यार्थी NON-CORE और OFF CAMPUS प्लेसमेंट से ज्यादा प्रभावित रहते हैं। इसपर आपकी क्या राय है?

मेरा मानना है कि जिन लोगों की दिलचस्पी कोर ब्रांच में नहीं होती है वे लोग non-core से जुड़ जाते हैं। जिन लोगों की दिलचस्पी मार्केटिंग में होती है वे लोग ज्यादा non-core प्लेसमेंट से प्रभावित होते हैं।

प्रश्न:- आप अपने जूनियर विद्यार्थियों को क्या टिप्स देना चाहेंगे?

मैं यही कहना चाहूँगा कि वे सभी मेहनत करते रहें। पढ़ाई के साथ-साथ अपनी रूचि को भी समय दें और पहले और दूसरे वर्ष में प्लेसमेंट के बारे में इतना न सोचें।

प्रश्न: प्लेसमेंट्स में होने वाले इंटरव्यू के लिए आपने अपने आप को किस प्रकार से तैयार किया था?

सबसे पहले मैंने तीनों प्रोफाइल्स के लिए तैयारी करना शुरू किया। मैंने competitive coding मेरी समर इंटरशिप, जो कि डेलॉयट में थी, उसके दौरान सीखना शुरू की थी। मैंने कई सारे लोगों के साथ ग्रुप डिस्कशन भी किए थे। मैंने ICICI और फाइनेंस से संबंधित तैयारियाँ भी अपनी समर इंटरशिप में ही की थी।

प्रश्न: ICICI के इंटरव्यू की प्रक्रिया किस प्रकार थी?

इंटरव्यू के पहला राउंड एक ग्रुप डिस्कशन था। स्टूडेंट्स को ग्रुप में बाँट कर ग्रुप डिस्कशन होता है। ग्रुप डिस्कशन के विषय कुछ इस प्रकार थे- भारतीय जीडीपी, इंडिया, फाइनेंशियल और बैंकिंग क्षेत्र से संबंधित। जो छात्र उस राउंड को पार करते हैं, उनका आगे इंटरव्यू होता है। इस बार इंटरव्यू लेने के लिए दो लोग आए थे, एक HR टीम से और एक टेक्निकल टीम से।

प्रश्न: आपको किस प्रोफाइल के लिए प्रस्ताव आया है?

अभी तो मुझे ठीक तरह से पता नहीं है कि मुझे कौनसा पद मिलेगा। मगर यह एक मैनेजमेंट ट्रेनी की पोस्ट है। जब मेरे पास औपचारिक पत्र आएगा तब ही पता चल पाएगा।

प्रश्न: प्लेसमेंट के लिए CG कितना महत्वपूर्ण किरदार होता है।

CG की प्लेसमेंट में बहुत बड़ी भूमिका होती है। अगर आपकी CG 7.5+ हो तो आप सभी कंपनी के इंटरव्यू दे सकते हैं। कम CG की वजह से आप अपनी मनचाही कंपनी के इंटरव्यू में बैठने से वंचित हो सकते हैं, चाहे आपमें उस पद ए लिए कितनी ही क्षमता क्यों न हो।

प्र.आपकी higher studies की क्या योजना है?

उत्तर-अभी तो मैं अपनी नौकरी के साथ ही चलूँगी। लेकिन भविष्य में बिल्कुल अपनी बाकी की पढ़ाई को जरूर पूरा करूँगी।

प्रश्न: जूनियर के लिए आपका कोई विशेष संदेश--

अपनी CG पर काम करते रहिए। पढ़ाई और बाकी चीजों में संतुलन बनाए रखना अनिवार्य है, और मैं अंत में यहीं कहूँगी "BITS PILANI IT'S MAGIC".

साक्षात्कार- विपुल सिंघल (प्लेसमेंट सह-प्रबंधक)

प्रश्न- इस सेमेस्टर का प्लेसमेंट सीज़न कैसा रहा?

उत्तर- इस सेमेस्टर प्लेसमेंट की तुलना में इंटरशिप बेहतर रही है। बहुत सारी पुरानी कंपनियों ने भी इंटरशिप को ज़्यादा महत्व दिया, जिसका कारण है कि प्लेसमेंट में किसी का चयन करने के बजाय किसी छात्र को अपनी कंपनी में दो से तीन माह काम करवाकर उसका बेहतर तरीके से आंकलन किया जा सकता है।

प्रश्न- P.U के द्वारा छात्रों में प्लेसमेंट से जुड़ी जागरूकता बढ़ाने के लिए क्या-क्या कदम उठाए गए हैं?

उत्तर- छात्रों की प्लेसमेंट से संबंधित जानकारी को बढ़ाने के लिए हमने एक नया फेसबुक पेज बनाया है और उस पर हमें अच्छी प्रतिक्रिया मिली है। हमारी कोशिश रहेगी कि उस पेज के जरिये हम छात्रों को प्लेसमेंट से जुड़ी ज़्यादा जानकारी दे सकें।

प्रश्न- आपके अनुसार पाठ्यक्रम में क्या-क्या बदलाव किए जाने चाहिए एवं कितने समय के अंतराल पर ऐसा करना चाहिए?

उत्तर- हमें कोशिश तो यही करनी चाहिए कि हमारा पाठ्यक्रम अद्यतन (Updated) रहे क्योंकि हर वर्ष इंडस्ट्री में कुछ न कुछ बदलाव होते रहते हैं, किन्तु यह मुमकिन कर पाना संभव नहीं है। मेरे विचार में हर दस वर्ष के अंतराल में हमें पाठ्यक्रम को संशोधित (Revise) करना चाहिए।

प्रश्न- तो फिर छात्र इंडस्ट्री में हो रहे बदलावों के बारे में कैसे जानेंगे?

उत्तर- इस मुद्दे को ध्यान में रखते हुए कॉलेज विभिन्न कंपनियों के अधिकारियों को टॉक एवं वर्कशॉप के लिए आमंत्रित करता है किन्तु छात्र उसमें ज़्यादा रुचि नहीं लेते, जबकि उन्हें ऐसी टॉक में भाग लेना चाहिए। यही एक जरिया है जिससे वे इंडस्ट्री में हो रहे बदलावों के बारे में जान पाएंगे।

प्रश्न- CV का प्लेसमेंट पर कितना प्रभाव पड़ता है?

उत्तर- अच्छे CV का तो हमेशा ही लाभ होता है किन्तु ज़रूरी यह है कि आपने जो कुछ भी अपने बायो-डाटा CV में लिख रखा है वह सब सच हो और आपको उन चीजों का सही ज्ञान हो।

प्रश्न- प्रोजेक्ट्स एवं इंटरशिप का अच्छे प्लेसमेंट में कितना योगदान होता है?

उत्तर- प्रोजेक्ट्स एवं इंटरशिप छात्रों को वास्तविक ज्ञान प्रदान करते हैं, एवं कोई भी कंपनी उस छात्र/ छात्रा को वरीयता देती है जिसके पास ज़्यादा वास्तविक ज्ञान होगा। किन्तु यहाँ पर आपने जो भी प्रोजेक्ट किए हो, उनका आपको ज्ञान होना आवश्यक है। आप यह उम्मीद नहीं कर सकते कि आप प्रोजेक्ट को हल्के में लें और आपकी अच्छी प्लेसमेंट लग जाये।

प्रश्न- किन-किन कारणों से प्लेसमेंट्स प्रभावित होते हैं? क्या बिट्स की गिरती हुई रैंकिंग का प्लेसमेंट्स पर कुछ असर हुआ है?

उत्तर- प्लेसमेंट पर NIRF रैंकिंग का तो कोई असर नहीं होता है किन्तु दो कारणों से प्लेसमेंट्स का स्तर गिर रहा है।

पहला- गोवा एवं हैदराबाद के कैंपस भी बहुत विकसित हो चुके हैं और उन तक पहुँचना कंपनियों के लिए पिलानी की तुलना में ज़्यादा आसान है, तो बहुत सारी कम्पनियाँ पिलानी के बजाए वहाँ से छात्रों को नौकरी देना ज़्यादा पसंद करती हैं।

दूसरा- आजकल प्लेसड होने के बाद बिट्स के छात्र या तो कंपनी जॉइन नहीं करते क्योंकि वे विदेश पढ़ाई करने चले जाते हैं या वे एक दो वर्ष कंपनी में काम करके किसी दूसरी कंपनी में नौकरी हासिल कर लेते हैं। इस वजह से भी कुछ संस्थान बिट्ससियन्स को नौकरी देने से

10 कतराने लगे हैं

इस चीज़ का प्लेसमेंट पर बहुत बड़ा असर हो रहा है और प्रत्येक वर्ष इसका असर बढ़ता जा रहा है।

प्रश्न- आजकल छात्र कोर सेक्टर में नहीं जाना चाह रहे। आपके अनुसार इसकी क्या वजह है?

उत्तर- मेरे अनुसार इसकी वजह शायद कोर में होने वाला फ़िल्डवर्क है। आई.टी. की तुलना में कोर में आपको वातानुकूलित ऑफिस नहीं मिलता, बड़े शहरों में रहने का मौका नहीं मिलता। विद्यार्थियों के मन में यह गलतफहमी है कि कोर के प्लेसमेंट अच्छे नहीं हैं। इस वर्ष कोर सेक्टर में बहुत कंपनियाँ आने को तैयार थी किन्तु छात्र कोर के लिए बैठे ही नहीं।

प्रश्न- विद्यार्थियों के लिए आपका कोई संदेश?

उत्तर- मैं सभी विद्यार्थियों को यह संदेश देना चाहता हूँ कि आप सभी अपनी पढ़ाई पर ख़ास ध्यान दे क्योंकि प्लेसमेंट में CG की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इसके अतिरिक्त, प्लेसमेंट से जुड़ी किसी भी समस्या या संशय के लिए पीयू ऑफिस से पर्याप्त जानकारी ले सकते हैं।

माईक्रोसॉफ्ट—वेदांत पटवारी

Microsoft उन कंपनियों में से एक है जिसमें हर कंप्यूटर साइंस या अन्य किसी ब्रांच का छात्र नौकरी करना चाहता है। इन “Product based companies” की कार्य संस्कृति बहुत ही अच्छी रहती और अनुभवी लोगों के साथ काम करने का मौका मिलता है। इस कंपनी में काम करने का मौका कंप्यूटर साइंस ब्रांच के छात्र वेदांत पटवारी को मिला।

प्र. आपको इंटरशिप में P.P.O. मिला या प्लेसमेंट सीज़न में आप चुने गए ?

उ. मैंने Microsoft में तीसरे वर्ष के पहले सेमेस्टर में इंटरशिप किया था। उस समय मुझे P.P.O. दिया गया जो मैंने स्वीकार कर लिया।

प्र. क्या आप आपने प्रथम वर्ष में किसी क्लब या डिपार्टमेंट का हिस्सा थे?

उ. प्रथम वर्ष में वर्ल्ड रिकवरी सोसाइटी, एन.एस.एस एवं एम.एस.पी (Microsoft Students Partner) का हिस्सा था।

प्र. IT कंपनी में चयन होने के लिए, आपके सी.वी. में क्या-क्या होना चाहिए ?

उ. IT कंपनी में चयन होने के लिए Data Structure Algorithms (DSA) और Object Oriented Programming (OOP) ठीक तरह से आना चाहिए। कंप्यूटर साइंस में होने का यह फायदा है कि सारे विषय आपके सी.डी.सी होते हैं तो कोई अलग मेहनत नहीं करनी होती है, और आपके PS-1 से भी काफ़ी फायदा हो जाती है। PS-1 में मैंने 2 प्रोजेक्ट्स लिए थे। किसी और ब्रांच में होकर भी अगर कोई अच्छा PS या प्रोजेक्ट कर ले तो उसका बहुत फायदा होता है। क्लब्स और डिपार्टमेंट्स आपके आत्मविश्वास को बढ़ाने में बहुत मदद करते हैं, और यह आत्मविश्वास इंटरव्यू में बहुत काम आता है। इन सब के अलावा आपकी प्रश्न हल करने की क्षमता भी मापी जाती है जो ऑनलाइन टेस्ट और इंटरव्यू में भी काम आती है।

प्र. आपने इंटरशिप के लिए तैयारी कबसे शुरू की थी?

उ. 2-2 में मैंने DSA पर काफ़ी ध्यान दिया था, उस समय से ही मेरी तैयारी शुरू हो गई थी, और इंटरशिप के लिए कोडिंग पर काफ़ी मेहनत की थी। मैंने अपने इंटरव्यू की तैयारी “geeksforgeeks” नामक साइट से की थी। सीनियर्स ने भी इंटरव्यू की तैयारी करने में बहुत मदद की। प्लेसमेंट यूनिट के द्वारा आयोजित टॉक ने भी मेरे कई प्रश्नों का उत्तर दिया।

प्र. आपने पढ़ाई के साथ इंटरव्यू की तैयारी कैसे की?

उ. मैं 2-2 में सारी कक्षाएँ जाता था और शाम के वक्त तैयारी करता था।

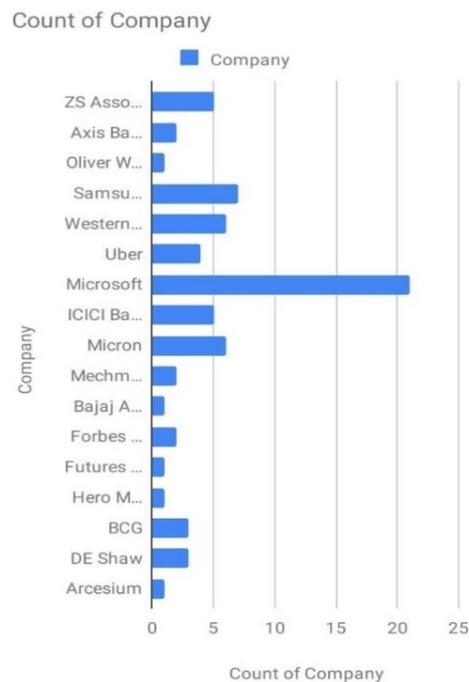
इशिका –EXXON

अमेरिकी बहुराष्ट्रीय तेल व गैस निगम, एक्सॉन मोबिल, दुनिया की सबसे बड़ी तेल कंपनियों में से एक मानी जाती है। एक्सोन मोबिल में काम तीन प्रमुख भागों में विभाजित है - अपरस्ट्रीम (तेल की खोज, निष्कर्षण, आदि), डाउनस्ट्रीम (विपणन, शोधन, आदि) और रसायनिक - R&DI। यह कंपनी बिट्स पिलानी से बस कुछ ऐसे छात्रों को प्लेसमेंट ऑफर देती है जो पढ़ाई के साथ बाकी क्षेत्रों में भी निपुण हैं। ऐसी ही एक छात्रा हैं - इशिका सोमानी।

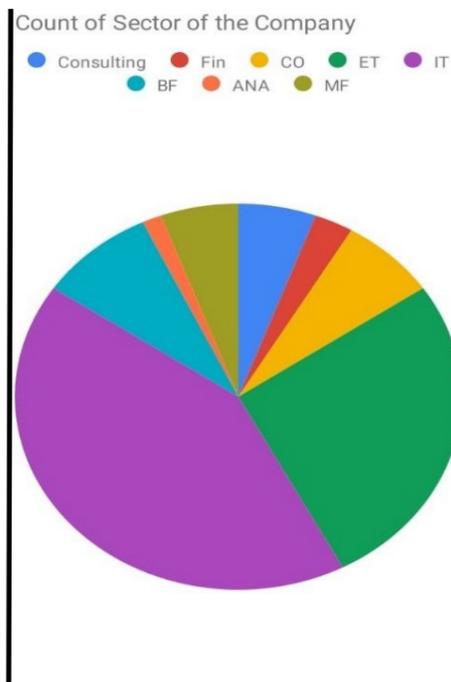
हमें इशिका से बात करने का सुनहरा अवसर प्राप्त हुआ। इशिका केमिकल इंजीनियरिंग पढ़ रही हैं। वह अपने प्लेसमेंट से काफी खुश हैं। उन्हें एक्सॉन की दो बातें काफी पसंद आईं। एक्सॉन में काफी तरक्की करने के मौके मिलते हैं और एक्सॉन में अपने कर्मचारियों से काम एक सीमा तक ही कराया जाता है। यह पहली कंपनी थी जिसके प्लेसमेंट में इशिका ने हिस्सा लिया था और इसी कंपनी में उनका प्लेसमेंट हो गया। इशिका का पैकेज 11 लाख का है। इशिका ने हमें बताया कि उन्होंने सिर्फ कोर कंपनी नहीं परन्तु अन्य सभी क्षेत्रों के लिए भी तैयारी की थी। उनकी रुचि अन्य क्षेत्रों में भी है, इस बात का खास ध्यान रखते हुए उन्होंने हर क्षेत्र के बारे में जानकारी रखी। इशिका की जॉब analytics पर केंद्रित है। एक विशेष बात यह भी है कि इस सेमेस्टर प्लेसमेंट में बैठने के लिए सभी प्रत्याशियों का CGPA 7.5 से अधिक होनी चाहिए था। इशिका के अनुसार प्लेसमेंट की शुरुआत होने से पहले सभी के लिए कुछ sessions का आयोजन हुआ था। इन sessions में सभी को साक्षात्कार तथा अन्य चीजों से अवगत कराया गया था। यही नहीं, कुछ ऐसे प्रश्नों की सूची भी सभी को बाँटी गई थी जो साक्षात्कार के लिए महत्वपूर्ण होती है। जॉब के चुनाव प्रक्रिया के दौरान सबसे पहले रिज्यूमे चुने गए, उसके पश्चात एक टेस्ट लिया गया था। उसके उपरान्त सभी चुने गए उम्मीदवारों का ग्रुप-डिस्कशन हुआ और अंतिम चरण में साक्षात्कार लिया गया। ग्रुप डिस्कशन की तैयारी के लिए इशिका ने इंटरनेट की सहायता ली। उनके अनुसार प्लेसमेंट तक की प्रक्रिया में CGPA के अलावा अन्य चीजों का भी बहुत महत्व है।

इसी सब के साथ-साथ, इशिका एडीपी नामक डिपार्टमेंट का हिस्सा भी हैं। उन्होंने बिट्स में उनके शुरुआती दो सालों में अपने डिपार्टमेंट को काफी समय प्रदान किया परन्तु इंजीनियरिंग के तीसरे वर्ष में आने के पूर्व उन्होंने अपना ज्यादा ध्यान पढ़ाई और प्लेसमेंट की ओर केंद्रित किया।

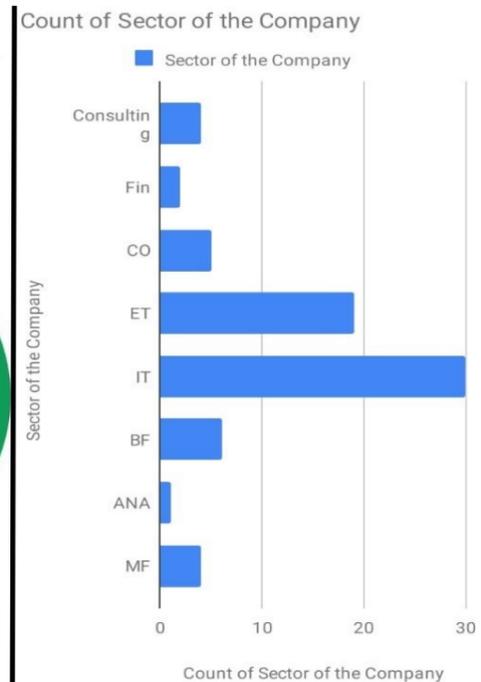
उनकी सभी फ्रेशर्स के लिए एक हिदायत यह है कि वह अपने CGPA को अधिक से अधिक महत्व दें और अगले वर्ष प्लेसमेंट्स में भाग लेने वाले छात्रों के लिए इशिका की यही सलाह है कि अगर उनको उनकी मनपसंद नौकरी नहीं भी मिल रही है तब भी वह निराश न हों। उन्हें हार नहीं माननी चाहिए और प्रयासरत रहना चाहिए।



"Microsoft" has the highest value for "Company" (21).



The top 2 values ("IT" and "ET") account for 69.0% of the total.



"IT" has the highest value for "Sector of the Company" (30).